

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 3: च्यवन-सुकन्या

15 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



एक शान्त वन-आश्रम में युवा राजकुमारी सुकन्या वृद्ध और शीघ्र क्रोधित हो जाने वाले ऋषि च्यवन की धैर्यपूर्ण, प्रेममयी सेवा करती हैं — एक ऐसी शुद्ध भक्ति जो स्वर्ग के वैद्यों को भी द्रवित कर देगी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और उपदेशों के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा। मनु के पुत्रों की बहुशाखी वंश-परम्पराओं से मुड़कर शुकदेवजी अब उनमें से एक — शर्याति — की ओर मुड़ते हैं, और उनके वंश को सुकन्या तथा ऋषि च्यवन की प्रिय कथा से होते हुए राजा ककुद्बी की ब्रह्मा के साथ चौका देने वाली भेंट तक ले चलते हैं।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 3 (तृतीय अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: च्यवन, सुकन्या और शर्याति का वंश
- प्रमुख वक्ता: शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण प्रसंग सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषि-समुदाय को सुनाया गया
- प्रमुख श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ऋषि च्यवन का वन-आश्रम; तत्पश्चात् राजा शर्याति का दरबार और ब्रह्मलोक
- केन्द्रीय विषय: सुकन्या का च्यवन से विवाह और उनका यौवन-लाभ; सुकन्या का पातिव्रत्य; और शर्याति का वंश ककुद्भी एवं रेवती तक, जिनका विवाह भगवान् बलराम से हुआ
- मुख्य श्लोक-सीमा: नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

राजा शर्याति और च्यवन का आश्रम

वैवस्वत मनु के एक अन्य पुत्र थे राजा शर्याति, जो वेदों में वर्णित परम सत्य के ज्ञाता थे, और जिन्होंने अंगिरा के वंशजों द्वारा किए गए यज्ञ में दूसरे दिन के कर्मकाण्ड का प्रामाणिक निर्देशन किया। उनकी एक पुत्री थी सुकन्या, जिसके नेत्र कमल के समान सुन्दर थे। एक दिन उसके साथ वन में विचरते हुए राजा ऋषि च्यवन — भृगु के पुत्र — के आश्रम में जा पहुँचे।

सुकन्या नाम तस्यासीत् कन्या कमललोचना ।

तया सार्धं वनगतो ह्यगमच्च्यवनाश्रमम् ॥ २ ॥

*sukanyā nāma tasyāsīt kanyā kamala-locanā tayā sārđham vana-gato hy agamac
cyavanāśramam*

अर्थ: उनकी पुत्री, जिसका नाम सुकन्या था, कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली थी। उसके साथ वन में जाकर राजा च्यवन के आश्रम में पहुँचे।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 2)

वह भाग्य-रचित बाँबी

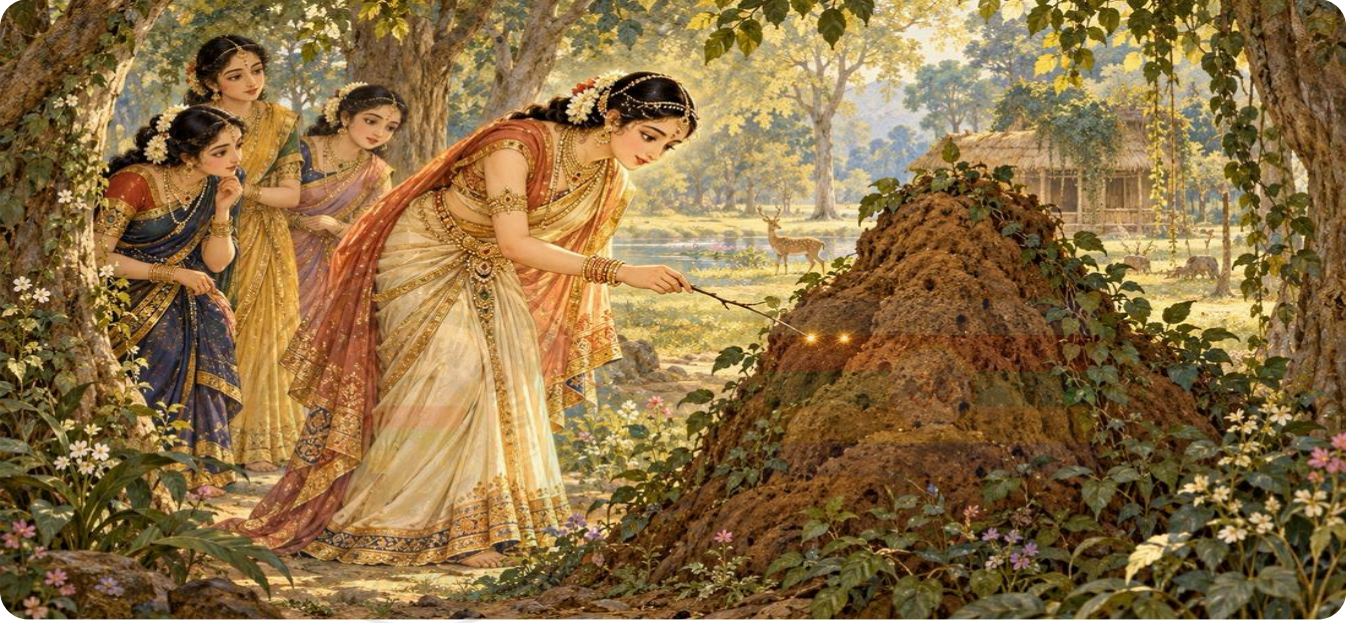
जब उसकी सखियाँ उपवन के वृक्षों के बीच घूम रही थीं, तब सुकन्या ने एक बाँबी (दीमक-टीले) के छिद्र में दो जुगनुओं के समान चमकते हुए दो बिन्दु देखे। वास्तव में वे ऋषि च्यवन के नेत्र थे, जो इतने दीर्घकाल तक निश्चल समाधि में बैठे रहे थे कि उनके शरीर पर बाँबी बन गई थी। भाग्य से प्रेरित होकर वह निर्दोष बालिका, अपनी बाल-सुलभ नादानी में, एक काँटे से उन दो चमकते बिन्दुओं को छेद बैठी — और उनसे रक्त बहने

ते दैवचोदिता बाला ज्योतिषी कण्टकेन वै ।

अविध्यन्मुग्धभावेन सुस्रावासृक् ततो बहिः ॥ ४ ॥

te daiva-coditā bālā jyotiṣī kaṇṭakena vai avidhyan mugdha-bhāvena susrāvāsṛk tato bahiḥ

अर्थ: भाग्य से प्रेरित होकर उस निर्दोष बालिका ने बाल-सुलभ अज्ञान से एक काँटे से उन दो चमकते बिन्दुओं को छेद दिया, और उनसे रक्त बाहर बहने लगा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 4)



उपवन में विचरती हुई युवा सुकन्या एक बाँबी के भीतर दो चमकते बिन्दु देखती हैं और निर्दोष कौतूहल में उन्हें काँटे से छेद देती हैं — यह न जानते हुए कि वे गहन समाधि में छिपे ऋषि च्यवन के नेत्र हैं (श्लोक 4)।

तत्काल राजा के अनुचरों पर एक विचित्र संकट आ पड़ा: उन सबका मल-मूत्र रुक गया। आश्चर्यचकित शर्याति ने अनुभव किया कि किसी ने ऋषि का अपराध किया है, और अपने लोगों से पूछा कि आश्रम में किसने विघ्न डाला है। भयभीत सुकन्या ने स्वीकार किया कि अज्ञानवश उसने यह किया है। तब राजा ने बाँबी के नीचे दबे ऋषि को श्रद्धापूर्वक प्रसन्न किया, और — ऋषि की इच्छा को समझकर — अपनी पुत्री का विवाह च्यवन से कर दिया। संकट से मुक्त होकर राजा आज्ञा लेकर अपनी राजधानी लौट गए।

एक पत्नी की भक्ति

अब उस अत्यन्त क्रोधी वृद्ध ऋषि की पत्नी बनकर भी सुकन्या ने अपने भाग्य पर विलाप नहीं किया। अपने पति के स्वभाव को समझते हुए उन्होंने सतर्क, सावधान और पूर्णतः समर्पित सेवा से उन्हें प्रसन्न रखा।

सुकन्या च्यवनं प्राप्य पतिं परमकोपनम् ।
प्रीणयामास चित्तज्ञा अप्रमत्तानुवृत्तिभिः ॥ १० ॥

sukanyā cyavanaṁ prāpya patiṁ parama-kopanam prīṇayām āsa citta-jñā apramattānurvṛttibhiḥ

अर्थ: अत्यन्त क्रोधी ऋषि च्यवन को पति रूप में पाकर सुकन्या ने, जो उनके मन को जानती थीं, सावधान और सतर्क समर्पित सेवाओं से उन्हें प्रसन्न किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 10)

अश्विनीकुमार और यौवन का सरोवर

कुछ समय पश्चात् देवताओं के दो वैद्य — अश्विनीकुमार — आश्रम में पधारे। उनका सत्कार करके च्यवन ने उनसे यौवन प्रदान करने की प्रार्थना की, और बदले में उन्हें यज्ञ में सोमरस का वह भाग दिलाने का वचन दिया जिससे वे अब तक वंचित थे। प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करते हुए दोनों देवों ने वृद्ध ऋषि से कहा कि वे सिद्धों द्वारा निर्मित एक पवित्र सरोवर में डुबकी लगाएँ।

इत्युक्तो जरया ग्रस्तदेहो धमनिसन्ततः ।
ह्रदं प्रवेशितोऽश्विभ्यां वलीपलितविग्रहः ॥ १४ ॥

ity ukto jarayā grasta- deho dhamani-santataḥ hradam praveśito 'śvibhyāṁ valī-palita-vigrahaḥ

अर्थ: ऐसा कहे जाने पर, च्यवन — जिनका शरीर वृद्धावस्था से जर्जर, उभरी नसों से ढका, झुर्रियों और श्वेत केशों वाला था — अश्विनीकुमारों द्वारा उस सरोवर में प्रवेश कराए गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 14)



देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार वृद्ध ऋषि च्यवन को सिद्धों द्वारा निर्मित एक पवित्र सरोवर में ले जाते हैं, जिससे वे यौवन और सौन्दर्य में नवीन होकर उठेंगे (श्लोक 11-14)।

चिकित्सा की सबसे उच्च कला की भी अपनी सीमा है। अश्विनीकुमार च्यवन के जर्जर शरीर को यौवन और सौन्दर्य लौटा सके, किन्तु स्वर्ग का कोई भी वैद्य आत्मा को अज्ञान और भौतिक बन्धन की उस गहरी वृद्धावस्था से मुक्त नहीं कर सकता। इस अद्भुत यौवन-प्राप्ति की कथा के भीतर एक मौन शिक्षा छिपी है: प्रत्येक कला और विद्या अपनी सिद्धि तक पहुँचती है, किन्तु किसी भी आत्मा के लिए सर्वोच्च सिद्धि भगवान् की प्रेममयी भक्ति ही है। च्यवन की यौवन की प्रार्थना, जिसे अश्विनीकुमारों ने मानो सहज खेल में ही स्वीकार कर लिया, इससे परे एक भिन्न प्रकार की उपलब्धि की ओर संकेत करती है — जो अनुष्ठान या औषधि से नहीं, अपितु भगवान् के प्रति समर्पण से प्राप्त होती है, जिनकी महिमा प्रकट करने के लिए ही शास्त्र का अवतरण हुआ है (श्लोक 11)।

एक निष्ठावान हृदय की परीक्षा

सरोवर से एक समान रूप वाले तीन युवक निकले — सभी सुन्दर, सूर्य के समान तेजस्वी, कमल-मालाओं से सुशोभित और सुन्दर वस्त्रों में सजे। यह पहचान पाने में असमर्थ कि इनमें से उनका पति कौन है, पतिव्रता सुकन्या ने अटकल से किसी को नहीं चुना; उन्होंने अश्विनीकुमारों की शरण ली और अपने सच्चे स्वामी को दिखाने की प्रार्थना की।

तान् निरीक्ष्य वरारोहा सरूपान् सूर्यवर्चसः ।

अज्ञानती पतिं साध्वी अश्विनौ शरणं ययौ ॥ १६ ॥

tān nirikṣya varārohā sarūpān sūrya-varcasaḥ ajānatī patiṁ sādhvī aśvinau śaraṇaṁ yayau

अर्थ: समान रूप और सूर्य के समान तेज वाले उन तीनों को देखकर, तथा अपने पति को पहचान न पाकर, वह पतिव्रता साध्वी अश्विनीकुमारों की शरण में गई। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 16)

उनके अटल पातिव्रत्य से प्रसन्न होकर दोनों देवों ने उन्हें उनका सच्चा पति दिखा दिया, और ऋषि से विदा लेकर अपने विमान द्वारा स्वर्ग लौट गए। कुछ समय पश्चात्, जब राजा शर्याति पुनः आए — यज्ञ करने के विचार से — और अपनी पुत्री के पास सूर्य के समान तेजस्वी एक युवक को देखा, तो पहले उन्होंने रूपान्तरित च्यवन को कोई अपरिचित समझकर, यह आशंका करते हुए कि उसने अपने वृद्ध पति के साथ विश्वासघात किया है, कठोर वचनों से पुत्री को फटकारा। मन्द मुस्कान के साथ उसने सारी कथा कह सुनाई, और आश्चर्यचकित एवं अत्यन्त प्रसन्न राजा ने अपनी पुत्री को गले लगा लिया।



सरोवर से तीन एक समान, तेजस्वी युवक निकलते हैं; यह पहचान न पाने पर कि इनमें उनका पति कौन है, पतिव्रता सुकन्या अश्विनीकुमारों की ओर प्रार्थना में मुड़ती हैं, जो उनके पातिव्रत्य के पुरस्कारस्वरूप उनका सच्चा स्वामी प्रकट कर देते हैं (श्लोक 15-17)।

अश्विनीकुमारों को सोम, और इन्द्र का मान-मर्दन

तत्पश्चात् च्यवन ने वीर राजा को एक सोमयज्ञ द्वारा भगवान् की आराधना कराई, और अपने तप-बल से दोनों अश्विनीकुमारों को सोमरस का एक पात्र अर्पित किया, यद्यपि उन्हें ऐसा भाग कभी अनुमत नहीं था। क्षण भर में क्रोधित होकर इन्द्र ने ऋषि को मारने के लिए अपना वज्र उठाया — किन्तु भृगुपुत्र च्यवन ने इन्द्र की भुजा को, वज्र सहित, स्तम्भित कर दिया।

हन्तुं तमाददे वज्रं सद्योमन्युरमर्षितः ।

सवज्रं स्तम्भयामास भुजमिन्द्रस्य भार्गवः ॥ २५ ॥

hantum tam ādade vajram sadyo manyur amarṣitaḥ savajram stambhayām āsa bhujam indrasya bhārgavaḥ

अर्थ: तत्काल क्रोधित और असहनशील होकर इन्द्र ने उन्हें मारने के लिए वज्र उठाया; किन्तु भृगुपुत्र च्यवन ने इन्द्र की भुजा को वज्र सहित स्तम्भित कर दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 25)

उस समय से आगे सबने स्वीकार कर लिया कि दोनों अश्विनीकुमार — जो वैद्य होने के कारण पहले वंचित थे — अपना सोम-पात्र प्राप्त करें।



जब इन्द्र अश्विनीकुमारों को सोम का भाग देने के कारण च्यवन को दण्ड देने हेतु अपना वज्र उठाते हैं, तब ऋषि अपने तप-बल से इन्द्र की उठी हुई भुजा को बीच में ही जड़ कर देते हैं (श्लोक 25)।

शर्याति का वंश: ककुद्भी, रेवती और युगों की उड़ान

शर्याति के तीन पुत्र थे — उत्तानबर्हि, आनर्त और भूरिषेण। आनर्त से रेवत हुए, जिन्होंने समुद्र के मध्य कुशस्थली नगरी बसाई और आनर्त तथा अन्य प्रदेशों पर शासन किया। रेवत के सौ श्रेष्ठ पुत्र थे, जिनमें ज्येष्ठ ककुद्भी थे। अपनी पुत्री रेवती को लेकर ककुद्भी ब्रह्मलोक गए, ताकि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से उसके लिए योग्य वर पूछ सकें। वहाँ दिव्य संगीत चल रहा था, अतः वे कुछ काल प्रतीक्षा करते रहे; और जब अन्ततः उन्होंने अपनी प्रार्थना रखी, तो ब्रह्मा हँसे और उन्हें एक विनम्र कर देने वाला सत्य बताया: जिन-जिन को ककुद्भी ने वर रूप में सोचा होगा, वे सब कब के काल द्वारा बहा दिए गए — यहाँ तक कि उनके वंशजों की स्मृति भी शेष नहीं रही।

उनकी प्रतीक्षा के बीच पृथ्वी पर चार युगों के सत्ताईस चक्र बीत चुके थे। तब ब्रह्मा ने उन्हें उस युग की ओर संकेत किया जिसमें वे अब लौट रहे थे, जहाँ परम भगवान् ने अपने महाबली अंश बलराम सहित पृथ्वी का भार हरने हेतु अवतार लिया था।

तद् गच्छ देवदेवांशो बलदेवो महाबलः ।

कन्यारत्नमिदं राजन् नररत्नाय देहि भोः ॥ ३३ ॥

tad gaccha deva-devāṁśo baladevo mahā-balaḥ kanyā-ratnam idaṁ rājan nara-ratnāya dehi bhoḥ

अर्थ: “इसलिए जाओ: वहाँ महाबली बलदेव हैं, जो देवाधिदेव के अंश हैं। हे राजन्, इस कन्या-रत्न को उस नर-रत्न को अर्पित कर दो।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 33)



ब्रह्मा के कालातीत लोक में राजा ककुद्भी को ज्ञात होता है कि उनकी प्रतीक्षा के बीच पृथ्वी पर चार युगों के सत्ताईस चक्र बीत चुके हैं, और जो कुछ वे जानते थे, सब काल द्वारा बहा दिया गया है (श्लोक 29-33)।

पूर्णतः बदल चुके संसार में लौटकर — उनकी नगरी उनके भाइयों द्वारा यक्षों के भय से कब की छोड़ी जा चुकी थी — ककुद्भी ने अपनी निर्दोषांगी पुत्री रेवती का विवाह महाबली बलराम से किया, और फिर तपस्या के लिए नारायण ऋषि के आश्रम, जिसे बदरिकाश्रम कहते हैं, चले गए।

सुतां दत्त्वानवद्याङ्गिं बलाय बलशालिने ।

बदर्याख्यं गतो राजा तप्तुं नारायणाश्रमम् ॥ ३६ ॥

sutāṁ dattvānavadyāṅgīm balāya bala-śāline badary-ākhyam gato rājā taptum nārāyaṇāśramam

अर्थ: अपनी निर्दोषांगी पुत्री को महाबली बलराम को अर्पित करके राजा तपस्या के लिए नारायण के आश्रम बदरिकाश्रम को चले गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 3, श्लोक 36)

इस अध्याय के प्रमुख उपदेश

1. निष्ठावान सेवा स्वयं में एक रूपान्तरकारी शक्ति है। एक वृद्ध और चिड़चिड़े पति से बँधी सुकन्या न शिकायत करती हैं, न पीछे हटती हैं; उनकी धैर्यमयी, सावधान भक्ति ही वह भूमि बनती है जिस पर पुनर्नवीनीकरण का चमत्कार घटित होता है (श्लोक 10)।
2. पातिव्रत्य और निष्ठा स्वर्ग की कृपा खींच लाते हैं। तीन समरूप पतियों के सम्मुख पतिव्रता सुकन्या अटकल नहीं लगातीं; वे प्रार्थना की शरण लेती हैं, और उनकी पवित्रता देवताओं के वैद्यों को भी उनका सच्चा स्वामी प्रकट करने को द्रवित कर देती है (श्लोक 16-17)।

3. सच्चा स्वीकार वह घाव भर देता है जिसे छल और बिगाड़ देता। सुकन्या द्वारा अपनी निर्दोष भूल का तत्काल स्वीकार पिता को ऋषि को प्रसन्न करने और लगभग-विपत्ति को वरदान में बदलने में समर्थ बनाता है (श्लोक 5-9)।

4. सच्चे भक्त का तप देवताओं को भी रोक सकता है। अश्विनीकुमारों को दिया अपना वचन निभाते हुए च्यवन शान्त भाव से स्वयं इन्द्र की भुजा स्तम्भित कर देते हैं — यह दर्शाते हुए कि सत्य में स्थित आध्यात्मिक शक्ति स्वर्ग के बल से बड़ी है (श्लोक 24-26)।

5. भगवान् के अतिरिक्त सब कुछ काल द्वारा बहा दिया जाता है। ककुद्भी थोड़ी-सी प्रतीक्षा से लौटकर पाते हैं कि पूरे युग बीत गए और जो कुछ वे जानते थे, विस्मृत हो गया; केवल अपने रत्न को भगवान् के अवतार को अर्पित करके ही उनकी यात्रा विश्राम पाती है (श्लोक 29-36)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के दो चित्र हृदय में बस जाते हैं। पहला — एक युवती एक निर्जन आश्रम में एक कठिन वृद्ध की मौन सेवा कर रही है, कुछ की आशा नहीं, कुछ की माँग नहीं — और पा रही है कि ऐसी निष्ठा में वह शक्ति है जिसका संसार को आभास तक नहीं। दूसरा — एक राजा सृष्टिकर्ता की सभा में खड़ा यह जान रहा है कि जिन मित्रों, वरों और राज्यों को वह “अभी थोड़ी देर पहले” छोड़ आया था, वे सब युगों के मौन में विलीन हो चुके हैं। इन दोनों को साथ रखकर एक ही शिक्षा मिलती है। जिसे हम स्थायी मानकर पकड़े रहते हैं — हमारा यौवन, हमारा पद, हमारे संसार के परिचित चेहरे — वह पहले ही काल की उँगलियों से फिसल रहा है। जो टिकता है, वह है भगवान् की ओर मुड़ा निष्ठावान हृदय: सुकन्या का अटल प्रेम, और ककुद्भी का अपना सबसे बहुमूल्य रत्न परम भगवान् के हाथों में सौंप देने का अन्तिम कर्म। जब अन्ततः और सब कुछ बह चुका होता है, तब वह समर्पण शेष रहता है, और उसी में विश्राम है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक ऐसे कर्तव्य या सम्बन्ध को चुनें जो निष्फल या कठिन प्रतीत होता हो — कोई व्यक्ति जिसे प्रसन्न करना कठिन हो, कोई कार्य जिसमें प्रशंसा न मिलती हो। सुकन्या की भावना से वहाँ अपनी सेवा मौन और पूर्ण रूप से अर्पित करें, पहचाने जाने की प्रतीक्षा किए बिना, इसे प्रत्येक हृदय में विराजमान भगवान् को अर्पण मानकर करें। आरम्भ करते समय धीरे-से प्रार्थना करें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” यह भी स्मरण रखें कि काल कितनी शीघ्रता से सब कुछ बहा ले जाता है, और उस स्मरण को फलों पर आपकी पकड़ ढीली करने दें, ताकि केवल सेवा और समर्पण की शुद्ध कामना शेष रहे।

उपसंहार

यह अध्याय कोमल और विराट् — दोनों को एक ही मुट्ठी में समेट लेता है। एक पतिव्रता पत्नी की मौन सेवा, एक ऋषि का वह तप जो इन्द्र की भुजा तक को स्तम्भित कर देता है, और एक राजा जो ब्रह्मलोक से लौटकर पाता है कि पूरे युग बीत चुके हैं — ये सब एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं: अनुष्ठान, औषधि या साम्राज्य जो कुछ भी दे सकते हैं वह क्षणिक है, किन्तु भगवान् के प्रति प्रेममय समर्पण क्षणिक नहीं है। सुकन्या की भक्ति, च्यवन का तप और ककुद्भी का अन्तिम दान — तीनों संसार के हाथों के बजाय भगवान् के हाथों में कुछ बहुमूल्य रखते हैं, और तीनों को कृपा से उत्तर मिलता है। उपयुक्त ही, अध्याय ठीक वहीं समाप्त होता है — रेवती का विवाह बलराम से होकर, और स्वयं ककुद्भी का अकेले नारायण की खोज में बदरिकाश्रम चले जाना।

श्रीमद्भागवत का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), नवम स्कन्ध, तृतीय अध्याय, पृष्ठ 8–11।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बद्धता या उसके अनुमोदन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-3-cyavana-sukanya-and-the-line-of-saryati-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट